सकारात्मक प्रभाव

1. आधुनिक शिक्षा का प्रसार– आधुनिकता के मूल्य तथा तार्किक एवं वैज्ञानिक दृष्टिकोण का प्रसार

   ⬇

   फलतः भारतीय संस्कृति का तार्किकीकरण व भारत में आधुनिक समाज का निर्माण

2. संचार क्रांति एवं स्थानीय गतिशीलता

   ⬇

   फलतः एक नवीन संश्लेषित वैश्विक संस्कृति का निर्माण

3. संचार क्रांति, यातायात के साधनों का विकास एवं बाजार अर्थव्यवस्था द्वारा– स्थानीय संस्कृति व लोक परम्परा का सर्वभौमिकीकरण / भारतीयकरण

   ⬇

   फलतः इनको नवीन पहचान प्राप्त– एवं सांस्कृतिक विविधता को संरक्षण

4. वैश्वीकरणजनित पहचान का संकट– परम्परागत सांस्कृतिक तत्वों के महत्व एवं प्रचलन में वृद्धि तथा इनका संरक्षण

   ⬇

   फलतः लोक / क्षेत्रीय संस्कृति का संरक्षण–

   फलतः सांस्कृतिक विविधता को संरक्षण

नकारात्मक प्रभाव

1. संचार क्रांति– फलतः पश्चिमी जीवन शैली (पश्चिमी परिधान, Valentine day, Live-in-Relationship, पश्चिमी संगीत व गीत आदि) का प्रसार

   ⬇

   फलतः परम्परागत भारतीय संस्कृति संकट में

2. संचार क्रांति एवं सांस्कृतिक समरूपता में वृद्धि

   ⬇

   फलतः सांस्कृतिक विविधता को खतरा

3. बाजार अर्थव्यवस्था के प्रभाव में वृद्धि–

   फलतः भारतीय संस्कृति का बाजारीकरण–

   ⬇

   फलतः भारतीय संस्कृति का मूल स्वरूप नष्ट

4. वैश्वीकरणजनित पहचान का संकट– फलतः प्रतिक्रियात्मक चेतना का विकास और नृजातीयता में वृद्धि

   ⬇

   फलतः नृजातीय संघर्ष / सभ्यता में टकराव

5. बाजार अर्थव्यवस्था एवं उपभोक्तावादी संस्कृति का प्रसार

⬇

फलतः मास संस्कृति का विकास और इनका अंधानुकरण– फलतः विकृत व अलगाववादी मानव का निर्माण

भू-स्थानीयकरण का अर्थ

वैश्वीकरण की प्रक्रिया के पश्चात् यह मान्यता विकसित हुई कि यह प्रक्रिया दुनियाँ की स्थानीय संस्कृति (Local Culture) को समाप्त कर देगी....., किन्तु व्यवहार में कुछ ऐसी प्रक्रियाएँ विकसित हुई जिन्होंने इन मान्यताओं को खारिज कर दिया..... इन्हीं प्रक्रियाओं को भू-स्थानीयकरण (Glocalization) कहा गया।

भूमण्डलीय के साथ स्थानीय संस्कृति के मिश्रण को भूस्थानीकरण की संज्ञा दी जाती है। आज वैश्विक कंपनियाँ अन्य देशों के साथ-साथ भारतीय बाजार में अपने उत्पादों को स्थानीय संस्कृति और स्थानीय ग्राहकों के पसंद-नापसंद के अनुरूप बनाकर बेचने का प्रयास कर रही हैं और उसी के अनुरूप अपने उत्पादों का निर्माण भी कर रही हैं।

वहीं कुछ स्थानीय कंपनियाँ/भारतीय कंपनियाँ भी अपने उत्पादों को अन्य देशों की स्थानीय पसंद-नापसंद के अनुरूप बनाकर विदेशों में बेच रही हैं; जैसे- मैकडोनाल्ड का भारतीय व्यंजन को बेचना या नवरात्र स्पेशल थाली या बर्गर आदि को बेचना; हिन्दी पॉप, भांगड़ा पॉप रीमिक्स आदि का प्रचलन या एप्पल द्वारा अपने iphone में भारतीय भाषाओं का प्रयोग आदि घटना भूस्थानीयकरण का श्रेष्ठतम उदाहरण है।

भू-स्थानीयकरण का प्रभाव

1. इसने स्थानीय संस्कृति को संरक्षण (Preservation of Local Culture) देकर नष्ट होने से बचाया है
2. इसने वैश्वीकरणजनित पहचान के संकट (Identity Crisis) का समाधान प्रस्तुत किया है
3. यह एक संश्लेषित वैश्विक संस्कृति (Synthetic Global Culture) का निर्माण कर रही है
4. इससे स्थानीय संस्कृति (Local Culture) अपना मूल स्वरूप खोती (Loses its Original Form) जा रही है

भू-स्थानीयकरण : संभावित प्रश्न

प्रश्न: भू-स्थानीयकरण क्या है? यह बहुराष्ट्रीय कंपनियों द्वारा अपनाई गयी बाजार संबंधी रणनीति है अथवा कोई सांस्कृतिक संश्लेषण की प्रक्रिया है? चर्चा कीजिए।

उत्तर :

Part –I : भू-स्थानीयकरण के अर्थ की चर्चा

Part-II : बहुराष्ट्रीय कंपनियों की बाजार रणनीति या सांस्कृतिक संश्लेषण की प्रक्रिया?

निश्चित रूप से बहुराष्ट्रीय कंपनियों (Multinational Companies) द्वारा प्रारम्भ यह प्रक्रिया उनके बाजार संबंधी रणनीति से प्रभावित है। नये बाजार के अवसर और बड़े बाजार की उपलब्धता हेतु विभिन्न तरीको से, अपने उत्पादों को भारतीय संस्कृति (Indian Culture) और यहाँ की माँग के अनुरूप बनाकर बेचने में, उसका आर्थिक हित (Economic Interests) सर्वोपरि है।

परन्तु इसमें कोई दो राय नहीं है कि– इसमें सांस्कृतिक संश्लेषण (Cultural Synthesis) की प्रक्रिया भी साथ-साथ चल रही है। आधुनिक मूल्य, प्रौद्योगिकीय शिक्षा, सूचना व संचार (Modern Values, Technological Education, Information and Communication) के नवीन साधनों ने, भारतीय लोगों के मानसिकता को प्रभावित करके उन्हें एक नवीन बदलाव की ओर प्रेरित किया है,

और बहुराष्ट्रीय कंपनियों में काम करने वाली जनसंख्या के माध्यम से, विभिन्न देशों के मध्य सांस्कृतिक संश्लेषण की प्रक्रिया को तीव्र किया है और यह स्थिति भारत में भी दृष्टिगत हो रही है।

जिससे परम्परागत भारतीय संस्कृति न केवल पुन:जीवित हुई है, बल्कि कुछ नवीन तत्वों के साथ संयुक्त होकर एक नये रूप में परिलक्षित हो रही है।

प्रश्न: Social Networking Sites क्या हैं? इसका भारतीय जनमानस पर पड़ने वाले प्रभावों की चर्चा कीजिए।

उत्तर: Social Networking Sites का अर्थ– Internet पर उपलब्ध ऐसे Sites जिनके माध्यम से, व्यक्तियों द्वारा

सामाजिक अन्त:क्रियाएँ की जाती है, सोशल नेटवर्किंग साईट कहलाता है; जैसे Facebook, Twitter, WhatsApp, Telegram आदि

SNS का सकारात्मक प्रभाव

1. पुनः सामाजिक जुड़ाव (Social Bonding) में वृद्धि
2. विभिन्न मुद्दों पर जन सहभागिता (People Participation) में वृद्धि
3. दबाव समूह (Pressure Group) के रूप में क्रियाशील

4. स्थानीय समस्याओं का सार्वभौमिकरण (Universalisation of Local Problems)
5. अलगाव व एकाकीपन (Isolation and Loneliness) को दूर करने का एक मात्र माध्यम
6. विचार, सूचना तथा ज्ञान (Ideas, Information and Knowledge) का तीव्रता से फैलाव का माध्यम
7. विवाह संबंधों में सहयोगी

SNS का नकारात्मक प्रभाव

1. निजता का संकट (Privacy Crisis)
2. विभिन्न सूचनाओं, महत्वपूर्ण दस्तावेजों, फोटो, आदि की सुरक्षा खतरे में
3. नवीन प्रकार के अपराध (साईबर क्राईम) और पुराने अपराध में सहायक होकर, आन्तरिक सुरक्षा को चुनौती

4. समाज विरोधी गतिविधियों एवं अपवाहों को फैलाकर सामुदायिक सौहार्दता को चुनौती (असम हिंसा)
5. आतंकवादी गतिविधियों में सहायक होकर आंतरिक सुरक्षा को चुनौती (ISIS)
6. अश्लीलता (Obscenity) में वृद्धि (Porn Sites etc.)
7. पश्चिमी संस्कृति (Western Culture) के प्रसार द्वारा भारतीय संस्कृति (Indian Culture) के समक्ष संकट

समीक्षा

निश्चित रूप से Social Networking Sites तकनीकीकरण व वैश्वीकरण (Technologization and Globalization) की एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है, जो भारतीय समाज को सकारात्मक व नकारात्मक दोनों रूपों में प्रभावित कर रही हैं।

चूँकि हम निरन्तर आधुनिक समाज के निर्माण की ओर अग्रसर है, इसलिए इस तरह के Sites को रोकना उपयुक्त नहीं है।

तथापि इसको नियंत्रित करके और भारतीय समाज एवं संस्कृति (Indian Society and Culture) के साथ समायोजित करके, इसके नकारात्मक प्रभावों से बचा जा सकता है और इसको भारतीय संस्कृति हेतु अधिक उपयोगी बनाया जा सकता है।

संभावित प्रश्न

प्रश्न : वैश्वीकरण की प्रक्रिया ने हमारी सामाजिक सांस्कृतिक व्यवस्था के समक्ष एक नवीन चुनौती को प्रस्तुत किया है। चर्चा कीजिए।

उत्तर :

Part-I: भूमिका- शुरूआत

Part-II: भारतीय संस्कृति पर वैश्वीकरण का चुनौतीपूर्ण प्रभाव

परिवार का विघटन

- संयुक्त परिवार का विघटन
- संयुक्तता की भावना का ह्रास
- परिवार के प्रकार्य (Function) में कमी

विवाह संस्था पर प्रभाव

- विवाह-विच्छेद की दर में वृद्धि
- यौन-संबंधों में खुलापन फलतः यौन नैतिकता का ह्रास
- Live in Relation में वृद्धि
- समलैंगिकता का प्रचलन
- अविवाहित रहने की प्रवृति का विकास
- विवाह का बाजारीकरण

जाति व्यवस्था पर प्रभाव

- परम्परागत जजमानी व्यवस्था कमजोर
- जाति का संस्कारागत पक्ष कमजोर
- पेशेवर जातियों की परम्परागत कौशल विलुप्त

धर्म पर प्रभाव

- धर्म का आध्यात्मिक पक्ष कमजोर
- धर्म का बाजारीकरण फलतः धर्म में निहित पवित्रता का ह्रास
- धार्मिक कट्टरतावाद में वृद्धि
- धार्मिक आतंकवाद में वृद्धि

समीक्षा

निश्चित रूप से वैश्वीकरण की प्रक्रिया ने भारतीय सामाजिक, सांस्कृतिक संस्थाओं के समक्ष चुनौती को उत्पन्न किया है,

परन्तु यह भी सत्य है कि भारतीय परम्परा में निहित अनुकूलनशीलता, सहिष्णुता, लोचशीलता एवं आधुनिकीकरण की प्रवृत्ति ने इनकी निरन्तरता को सम्पोषित किया है, और वे नवीन परिवर्तनों के साथ आज भी बने हुए है।

जहाँ तक इनके नकारात्मक प्रभावों का प्रश्न है, तो यह परिवर्तन की संक्रमणकालीन अवस्था का परिणाम है, जो आधुनिकता के परिपक्व होने के साथ ही स्वतः समाप्त हो जायेगा।

प्रश्नः परम्परागत रूप से सशक्त एवं सांस्कृतिक रूप से सम्पन्न भारत के लिए, वैश्वीकरण के सांस्कृतिक / सामाजिक प्रभाव, कई विरोधाभासों को उत्पन्न करते हैं। चर्चा कीजिए।

उत्तर :

Part –I : सकारात्मक प्रभावों की चर्चा

Part –II : नकारात्मक प्रभावों की चर्चा

Part –III : समीक्षा

स्पष्टतः वैश्वीकरण ने भारतीय सांस्कृतिक व्यवस्था पर विरोधाभासी परिणामों को उत्पन्न करते हुए, कई नवीन समस्याओं को जन्म दिया है, परन्तु साथ-साथ यह भी सत्य है कि– ये नकारात्मक परिणाम एक संक्रमणकालीन अवस्था (Transitional Phase) का परिणाम है।

जहाँ भारतीय जनमानस इस नवीनता से अपना सामंजस्य स्थापित नहीं कर पर रहा है, क्योंकि जब परिवर्तन की प्रक्रिया धीमी और संतुलित होती है, तब सांस्कृतिक विघटन की संभावना कम होती है।

इसलिए आवश्यक है– वैश्वीकरण के कारण भारतीय संस्कृति पर पड़ने वाले नकारात्मक प्रभावों को एक तरफ रोकने की और दूसरी तरफ इसके पक्ष में जनमत निर्माण की, ताकि बिना सांस्कृतिक विघटन के, आधुनिक भारतीय समाज के निर्माण को संभव बनाया जा सके।

प्रश्न : "वैश्वीकरण ने एक आधुनिक परन्तु अलगावित मानव का निर्माण किया है।" चर्चा कीजिए।

उत्तर :

Part-I : वैश्वीकरण द्वारा आधुनिक मानव का निर्माण (आधुनिकता के मूल्यों के प्रसार द्वारा)

Part-II : वैश्वीकरण द्वारा अलगावित मानव (Isolated Human) का निर्माण

- उपभोग प्रधान मनुष्य का निर्माण
- व्यक्तिवादिता में वृद्धि व सामूहिकता का ह्रास फलतः स्वकेन्द्रीत मनुष्य का विकास
- अत्यधिक धन के चाह के कारण व्यस्तता में वृद्धि– फलतः बच्चे, पत्नी, माँ, बाप एवं अन्य संबंधों से अलगाव

Part-III : निष्कर्ष–

स्पष्ट है कि वैश्वीकरण की प्रक्रिया ने आधुनिक मानव के निर्माण के साथ-साथ मनुष्य को अपने सगे-संबंधियों से, यहाँ तक कि अपने आप से भी अलगावित किया है।

परन्तु सामूहिकता के नवीन मंचों, जैसे Social Networking Sites (Facebook, WhatsApp) आदि की मदद से आधुनिक संदर्भ में सामूहिक जीवन को बनाये रखने हेतु नया अवसर भी प्रदान किया है। यह भी सत्य है कि, आज आधुनिक मनुष्य पूर्णतः अलगावित नहीं है,

बल्कि तमाम व्यस्तताओं के बावजूद विवाह, त्यौहार आदि विभिन्न अवसरों पर अपनी उपस्थिति दर्ज कराकर सामाजिक उत्तरदायित्व का निर्वहन भी कर रहा है।

प्रश्नः "वैश्वीकरण ने जहाँ एक संश्लेषित वैश्विक संस्कृति के निर्माण को संपोषित किया है, वहीं लोगों में प्रतिक्रियात्मक चेतना को उत्पन्न करके परम्पराकरण को भी बढ़ाया है।" चर्चा कीजिए।